



गानो हं शरव जितं वग्ना सधु जां शोः स्फुटपर्वसं जौ ॥२॥ स्व
दादरां शो नितम कमाने स्वजाति भागो नितमिन्दुमानं ॥
चि ध्रुव नो गणा वनरान् चितो कं भोग्या गति भागो न विवृजितो
गो ॥३॥ स्थितमर्द्धमीगा हती मन्दुरवदुं रवपंच पुक वंदो वरव
दितं वः ॥४॥ दीनं धनं पर्वरीति श्री श्रेः स्वरो थि मुक्ती धृतदि एका
ल ॥५॥ गाना दिं शतिगुणिता स्फुटनिज माने न भाजितं वि
था ॥६॥ शो नरव दाद्रस संगु रोगा श्वरव पंच पुकरव राटु फलं

विमर्दः ॥७॥ दीन धनं पर्वरीति च न्यु जान्मो नी मील नो नर तिन न ना
टिका सु ॥८॥ दिद्वा दशो वया मित्रे समरा शिपते यथा ॥९॥ तथा
पटिका एके योगे गृह्णा च प्रसूर्य यो ॥१०॥ इति
श्री सुख्य सिद्धि तैत्तिरीय स्मृतं नंद विरचितं भास्वतिकररी
चन्द्रगृह्णा विमर सधमः ॥११॥ नता दश आजितं नय
इति प्रतः द्वे वनते नयुतं नतं च ॥१२॥ ता वां कनिधो नयुतस्य
भागो प्रावि प्रति जो शरशा प्रशा वा ॥१३॥ एतथ कल्पनां शाधिक

लसंगुणासारवर्गः ॥ अत्रावलनं गुह्यमिति ॥ ३॥ वन्द्यार्कचोदि
कल्पममं ॥ ५ ॥ सव्यापसव्येयलनागस्तुचेः ॥ ॥ सव्यादुदकप
क्षिततः ॥ ६ ॥ रासंनसमोर्ध्वसूत्रेणारविन्दुरवसुसुः ॥ ४ ॥
वलनमप्रादुर्भुवदेवतादुक्षेत्रेकदायदिः ॥ ॥ भेदेप्रमदुम्
रं देयमिन्द्रोर्ध्वानोविषय्ययानः ॥ ५ ॥ स्थितसुदुमिरे
रसवेतवेदमर्तमार्तंगलेपागुरयोक्तद्व्यातः ॥ ॥ सव्या
धमुक्तिस्वमरायथावन्निमित्तनोलिनीलगतकृत
वन्ति ॥ ६ ॥ असीतुलंप्रहृष्टीत्योमप्रेतकिंभाकिं
तर्धद्व्यागुलयासमाध्यातानाकृतिनः ॥ ७ ॥

गवाश्चिवेदादुगतेयुगादेदिव्योक्तिनः ॥ ८ ॥ पूर्वो
जमस्य ॥ ९ ॥ अमासतानन्दइतिनमाहसरस्यतिसेक
र्योस्तनुजः ॥ १० ॥ अइतिद्व्यसिद्धानेसोस्तानन्दवि
रविनेभास्यनिकरानेपारित्नेषाधीकारेअवमोशान
॥ ॥ ११ ॥ ॥ समाप्तिद्वयथम् ॥ ॥ अमावे ११८०

सद्यत् १९१५ माघ कृष्ण पंचम्यां रविवासरौ सित्पापहृन्न
गरेवात्मव्यां ब्रह्मराजगन्तनिभट्टेन लिखितं इदं भास्वमि
ग्रंथं शुभं राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमदुत्तररावकमलैभ्यो
नमः ॥ श्रीराजाय नमः ॥ श्रीराजाय नमः ॥ श्रीराजाय नमः ॥

श्रीगणेश

श्रीगणेशाय नमः

इति
पुष्प
माल
प्र.

स्वस्ति श्रीसर्वोदयमा जैग्यत्पादिसकलग्रामगहिद्वर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



कुंजपत्र नमो फले रं कर मुर ती मध्या रे शा न्गु
ष ७

भाति

२६

गोपि वंद्य
स्त्रिंशैल ॥ ११ ॥

मयो मंत्र लमब्ध यज्ज

मिन्दो केनु शर्त भस्त्रमसुः खास
दोनदक राम घनौ खने घो मयोरवस

भाति
३२

नां॥ वयो घना विश्व इभा यय श्रवयो घना पंचनखा गुणाद्यः
॥१३॥ कुजादि शिखरस्य च भूतयो मिह का स्मृति शैर्ग रित
प्रविशेः॥ घना गना गा वि रवि घुक्ति भौग्या हता वा ससना
प्रलघं॥ १४ उने नुरवराडे साहि तो न्यथो न मंदस्फुटा भुक्ति
रियं कुजादे मंदस्फुटा शिखरगतो विशो ध्याया गव ६६
ना भोग्य प हना शता प्रा॥ १५॥ वह ल्प भोग्यो ~~...~~ ॥ १६॥
था ~~...~~ का ति चारे वि परित शो ध्या॥ भादि धन द्रो क

॥ १६॥
राम
३०

२८

हृत्तोग हृत्परा रपादि रं कै गति क ता प्र ॥ १६॥
भादि २ हि दा दिष्ट गति हाररा रा कती रां हि मुखे
राते च॥ विज्जी श्मी गंध वंदसा गमा से प्रक्री ॥
के प्राप्ति ति गति व ह्य ॥ १७॥ वरुष द्यो प्राद
भारा भाषा के विना स शरसा ज्ञ ॥ १८॥

राम

भाति

स्वशिखके प्रस्य तु मे डुला ज्या पूर्वा पराव न

२८

भास्वति
२५

गवासास्य ॥१५॥ बभूवुः भूमाकागुराकुदस्त्रायज्जा
दिनाभ्युत्थानाः स्यातामस्तवत्तमग्नेः। वसुपंच
भूः। त्याग्यन्वतः परतोधि को कति ॥१६॥ भो
मोग्यति वक्तव्यं पुः विरारुत्तोरैस्वरीद्यो निते नू २५
चन्द्रस्तस्य नृपयादरा मुनी जीवो रश्मि पर्वत
॥ पुनरवधुरत्तरवराधुतयो वक्षी नुनागे पुनकोटि

भास्व
३०

स्य परिहृत्य पुष्कल गानि मागि सुवेदो विहिते ॥२०॥
मो मोक्षदह नगहरे वज्र लघ्वे स्त्री म्यो रिन्दे गुरुवामा
वी भृगुजो यमो रिष से कन्दे च शि घ्नन्ति ॥ लघ्वं संशुद्धि
न लिप्यन्त गगने काष्ठारि का पो भग वत्स स्मिन्ध
कविशो विहिते स पुं दयं याति कु वरे चरा ॥२१॥ पल
प्रभा त्वह तार वर वा के पुनः सुख के री स माय भास्वति
दिनोत्तर ॥ या म्या तदा स्या दुदयो मिश्रान्ते पुनेर गम

३९

भास्व
ति

गतम् स्वसुरागिहं तु ॥ १२१ ॥ सपुत्र भास्व तिलोर्कसा
 म्यं वने दवा संसप्तुवै न्या म्यम् ॥ युद्धं मया हतम्
 त्रिदिग्गजं युद्धं युद्धं दत्तं तु चकार ॥ १२३ ॥ संशो
 मेरा ऊरु विप्रं तं पातनं कृत्वा गिरिगलं चतुर्द्वार ॥ १२४ ॥
 पातनं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं
 युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं

राम
३९भाति
भास्व
ति
३९

चकार युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं ॥ १२५ ॥ भुक्त्वा युद्धं युद्धं युद्धं
 युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं
 युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं
 युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं
 युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं
 युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं
 युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं युद्धं

राम

३२

भास्वति

३३

चोत्ररथुंगं स्यात्स मस्तं वृष कं न योः ॥ २२ ॥ इति
 श्रीसूर्यसिद्धांतस्यारण्यतानन्दविरचिते
 भास्वतिकरणगोत्रहस्याष्टाचिकारः श्रुतं यः ॥ २३ ॥
 त्रपाक्षिबेदे रदितान्द्रकादादिशेषये
 न मोगरामे ॥ स्यत्पान्तव कीपाद्युत्तादिमन्त्रा
 शतेनल ज्ञाः प्रपनराकास्तु ॥ २४ ॥ शी केन्द्रका सरव

३३
राम

भास्वति

३४

शरा ॥ छुही नय वृषाप्रसरया प्रपनां शीकास्तुः ॥
 अदुर्गातातेयुतमिववायी भवेद्युह न्यदुनिशेप्रभारो ॥ २५ ॥
 छुहन्दतोगाव कुमिर्गजां नुदे स्वप्ने गतिव्यात्ररदक्षिरो
 ॥ २६ ॥ तारवरामं क्रमशः श्वदघात्सादं सिषयं च दलं
 वरायी ॥ २७ ॥ पलप्रका चुरारयटयमाप्रं प्रवेन्दुम
 योऽपमृगां वगोला ॥ २८ ॥ अहर्दलं यत्संमस्तमम

राव

हीन ध्यानादिरा मा रिजंनं स्यात् ॥४॥ षड् द्युं व ए र्धं दस
भागहिने याम्या हिरा मां सयुतं दसा प्रः ॥ न दक्षि ही न क्षी
वियु के मा मोरु दपदाक्षिरातः प्र भास्यात् ॥५॥ ह
यादरा म्प्रा रान्त स पुता व म म्प्रे द्या प्र मो ना भवती ह
रा कुः ॥ रा मो हुता ह दल लल सा दा प्र म हा ति यो चा वि का
दि का ल ॥ ६ ॥ र म्पु नि द्या दुर ल ह ले य ना प्र म धा प्र

मया स मे न म् ॥ रा तो नि तंत दुरा पि वि भ त्तं ल ज्वा
ग ल द्या भ व ति म्प्रा ता मा ॥ ७ ॥ ल गं ल स र्पा द य त प्र
स्वः ॥ स्व मा द यो सो र दि द्वा न्दु पा ता र ॥ ल गं रा य व
व ॥ य रा स न का रा ग जो व म ज्म व र वा प्र यो न्य म्
॥ ८ ॥ रा रा धि यु मे वि भ जे न्यु ल व नं क र क्षि पे
सो द य का नि क या दि न् ॥ ९ ॥ ल गं स म्प मो यो द य के न
हो वं वि म न्य पंचा धि य मे प्र ल च ॥ १० ॥ मु सो द य

वेत्सुहितं प्रकृतं तेषां विभज्य प्रफुल्लितं ॥
 सुखं दद्यात्तु यद्विद्याः पुनर्यत्तु सप्तधा विभज्य नरव
 रस्यै प्रगुरा ॥ ११० ॥ ततः क्रियादिभिरुदयं विद्वद्भ्यः प्र
 कृतं कलुषं तपोदयं भविष्ये ॥ १११ ॥ राघवं वदन्त्यादिगुरां वि
 भज्य भोग्योदयं प्रभवतीष्टतमः ॥ ११२ ॥ तथा प्रयोगं
 रागं विलग्नं पापं त्रयं जं कथितं मुनीन्द्रे ॥ लकोदये
 पूर्ववदेव साधुषां विभज्येति यथोदितं तत् ॥ ११३ ॥

॥ स्यात्प्रकाशपालननलनहीनं पुनं प्रकृष्टादिपरेन्ते
न ॥ न पुनं पत्रनतं प्रयो ज्यं च वही पुनं संचनतां विशो
धः ॥ १३ ॥ तं कोदयेस्तत्र पुनः प्रसाध्यं मध्यं विलग्नं प्रथ
मोक्तं मार्गं ॥ मध्यं विलग्नं रसमप्रयो ज्यं चाला लालं गंतं मु
नयो वदन्ति ॥ १४ ॥ लग्नं वतु था च सुखं कलत्रा न्म ध्याव
या मित्रक मं विरो ध्यम् ॥ १५ ॥ रव मं विलग्नं ताव विरो ध्यं
चं यं हो स्वकीयं कं मतः प्रयो ज्यम् ॥ १६ ॥ भावद्वयो गद

लस्तुसंधितसुत्रस्थितस्याप्युपलोकहेन्द्र॥व
 द्याधिनिष्ठापलभादिताचलंकावधिस्यादिहदक्षि
 राक्षिः॥१९६॥दिगुरागविषुवकायाविभजेत्कमरा
 सिधाः॥१९७॥पुदुरोत्तरेवंचरुडोविनाडिकाः॥१९८॥वसु
 ५३ १९१२ १५-११११

क्षानंदनंदादित्रिरदाक्षकमान्॥वरखडोनिर्लंघ
 तंविनाड्योनांकोदयाः॥१९८॥तंकोदयरवंदुलुपेजनस
 रत्नतरपुटाः॥१९९॥पुदुमिपक्षान्नवदेवक्षपक्षभराम
 क्षानंदनंदादित्रिरदाक्षकमान्॥वरखडोनिर्लंघ
 तंविनाड्योनांकोदयाः॥१९८॥तंकोदयरवंदुलुपेजनस
 रत्नतरपुटाः॥१९९॥पुदुमिपक्षान्नवदेवक्षपक्षभराम
 क्षानंदनंदादित्रिरदाक्षकमान्॥वरखडोनिर्लंघ
 तंविनाड्योनांकोदयाः॥१९८॥तंकोदयरवंदुलुपेजनस
 रत्नतरपुटाः॥१९९॥पुदुमिपक्षान्नवदेवक्षपक्षभराम